# 30 जुलाई, 2010 को 1730 बजे विज्ञान भवन, हॉल सं. 6, नई दिल्ली में राष्ट्रीय मैत्री पुरस्कार वितरण समारोह के अवसर पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

मुझे आज के इस समारोह में भाग लेते हुए और 'फाउंडेशन फॉर एमिटी एंड नेशनल सॉलिडैरिटी' द्वारा सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने के लिए आरंभ किया गया राष्ट्रीय मैत्री पुरस्कार प्रदान करते हुए प्रसन्नता हो रही है। यह फाउंडेशन देश भर में मैत्री, भ्रातृत्व एवं बंधुत्व को बढ़ावा देने और इस प्रकार राष्ट्रीय एकता तथा  सामाजिक सौहार्द में योगदान करने के अपने समर्पित कार्य हेतु हमारी प्रशंसा का पात्र है।

इस वर्ष राष्ट्रीय मैत्री पुरस्कार उस विरले व्यक्ति को दिया जा रहा है जिसने अपने चयनित पेशे में शोहरत पाते हुए आगे बढ़कर सामाजिक सौहार्द व राष्ट्रीय एकता के कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। इस प्रकार स्वर्गीय श्री सुनील दत्त ने पूर्ववर्ती पुरस्कार विजेताओं की श्रेष्ठ सूची में अपना स्थान बना लिया। मैं उनकी सुपुत्री एवं संसद सदस्य, माननीय प्रिया दत्त जी का इस समारोह में स्वागत करता हूं और राष्ट्र तथा उन सभी लोगों की ओर से आभार प्रकट करता हूं जिनके जीवन को सुनील दत्त जी ने प्रभावित किया था।

मित्रो,

'भ्रातृत्व ' हमारे संविधान की उद्देशिका का मूल तत्व है जिसे भारत की जनता ने अपने सभी नागरिकों के लिए सुनिश्चित करने का दृढ़संकल्प लिया है। उद्देशिका में उल्लेख है कि ऐसी बंधुता द्वारा व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित होनी चाहिए।

अनुच्छेद 51क के अनुसार, प्रत्येक नागरिक का यह मूल कर्तव्य भी है कि वह 'भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर विविधताओं भेदभाव से परे हो'।

श्री सुनील दत्त ने अपनी अंतिम सांस तक इस मूल कर्तव्य का पालन किया। प्राकृतिक और मानव-जन्य आपदाओं के दौरान उनकी भूमिका ने उत्तम रूप में यह दर्शाया कि प्रत्येक नागरिक को राष्ट्र के प्रति अपने मूल कर्तव्य के पालन हेतु क्या-कुछ करना चाहिए। उनकी पदयात्राओं ने आम नागरिकों के बीच उनके संदेश का प्रसार करने तथा सामाजिक समरसता के संबंध में उन्हें संवेदनशील बनाने में गहरा प्रभाव छोड़ा था।

मुझे विश्वास है कि श्री सुनील दत्त के प्रयासों का मूल संदेश सुश्री प्रिया दत्त तथा फ़ाउंडेशन फ़ॉर एमिटी एंड नेशनल सॉलिडैरिटी जैसे संगठनों के माध्यम से जारी रहेगा।

हमें याद रखना चाहिए कि जीवन की हर अन्य बात की तरह ही सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय अखंडता का व्यक्तिगत रूप से नागरिकों के स्तर पर, सामाजिक समूहों और समुदायों, सिविल समाज के स्तर पर और राज्य द्वारा पोषण और अमल किया जाना चाहिए।

मैं इस फ़ाउंडेशन और श्री वीरेन्दर मोहन त्रेहन को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इस समारोह में मुझे आमंत्रित किया और साथ ही मैं इसके सभी प्रयासों में इसकी सफलता की कामना भी करता हूं ।